यूनानीद्रव्यगुणादर्श तीक्ष्ण होता है । ऊटकटारा ककरीली और ऊसर जमीनमे होता है। ऊँटकटाराको ऊँट चावसे खाते है। इसी वातको दृष्टिमें रखकर इसके हिन्दी, अरबी, फारसी इत्यादि नामोकी कल्पना की गई है।
उपयुक्त अग-पचाग, जड और जडकी छाल । प्रकृति-दूसरे या तीसरे दर्जेमें उष्ण एव रूक्ष ।
गुण-कर्म तथा प्रयोग-दीपन, मूत्रल, बल्य, वाजीकर और शीतल श्वयथुविलयन । दीपन, पाचन और रोचनके लिये इसका उपयोग करते है। कामला, चतुर्थक ज्वर और आमवातमे भी इसका उपयोग होता है। इसकी जड टुकडे-टुकडे कर चोआ की तरह टपकाकर रखे । इसे आधा या एक माशाकी मात्रामे पानके साथ खानेसे वाजीकरण और स्तभन होता है । हस्तमैथुनके रोगियो के लिये इन्द्रीके ऊपर इसका पतला लेप (तिला) परम गुणकारी है। इसकी जड दूधमे पकाकर सेवन करनेसे भी वाजीकरण होता है। जडको छायामे सुखाकर और पीस-छानकर एक सप्ताह तक मधुके साथ चाटनेसे बहुत पसीनाका होना वद हो जाता है। अहितकर-वृक्क एव मस्तिष्कको । निवारण-कच्चे अगूरका शर्बत । प्रतिनिधि-अ जुदान (हिगुवीज)। मात्रा - ३ ग्राम से ५ ग्राम (३ माशे से ५ माशा) तक ।
आयुर्वेदीय मत-ऊँटकटारा (उष्ट्रकाण्डी) तिक्त, उष्णवीर्य, रुचिकारक और हृद्रोगनाशक है। वीज मधुर, शीतल, वृष्य और सतर्पक है (रा० नि० वर्ग १०)।
नव्यमत—पचाग दीपन, पौष्टिक, मूत्रल और रक्तशोधक है। शुक्र पतला होनेपर वीजोका प्रयोग होता है।
(७२, ७३) ऊदसलीब और फावानिया
फैमिली-रानुनकुलासे (Family Ranunculaceae) नाम-(हिं०) ऊदसालप, ऊदसलीव, (अ०) अदुल्सलीव, फावानिया, (बम्ब०) ऊदेसालम, (ले०) पेओनिभा आफ्फीसिनालिस Paeonia officinalis Linn , (अ.) आफिसिनल पेओनी (Officinal Peony), पिओनी (Peony)।
वक्तव्य-ऊदसालम और ऊदेसालम दोनो ऊदुलसलीब (स्वस्तिक काष्ठ-Wood of the Cross) क अपभ्र श है । पेओनिआ यूनानी पैओनिअ, 'Paionia' का लेटिन रूपान्तर है, और पेओन (Paeon) यूनानी पोन 'Paron' से व्युत्पन्न है। पेओन यूनानियोके देववैद्य थे। इन्होने सर्वप्रथम इस उदभिज्ञका अन्वेषण और वर्णन किया, इसलिये उन्हीके नामपर इसका पेओनिया नाम रखा गया । अग्रेजी पेओनी, लेटिन पेओनिआसे व्युत्पन्न है।
उत्पत्तिस्थान-दक्षिण यूरोप और पश्चिमी एशिया (कृपिकृत)।
वर्णन-ऊदसलीवके मूल जो बाजारमे मिलते है, उनका आयात यहाँ टर्कीसे होता है । मूल १ से २ इञ्च लम्बे, 3 से ३ इञ्च मोटे (व्यासमें), मध्यमे मोटे और दोनो छोरोकी ओर गोपुच्छाकार होते है । वाहरी पृष्ठ गुलावीभूरा होता है और उसपर लम्बाईके रूखमे गहरी रेखाये होती है। भीतरी भाग सफेद पिष्टमय और प्राय स्वादरहित होता है । काटनेपर छिलका कडा और कुछ-कुछ पीले रगका मालूम होता है । मूल प्राय निर्गन्ध होता है। ताजे काटे हुए मूलकी गध धीमी तीक्ष्ण होती है। स्वाद किचित् चरपरा अथवा मीठा, वादको तिक्त होता है। इसे चबानेपर थोडी देर बाद तीक्ष्णता, चरपराहट और थोडी-सी कडुआहट मालूम हो और जिह्वापर खिचावट पैदा हो, वह उत्तम समझा जाता है । इसमे सातवर्ष तक वीर्य रहता है। स्त्री-पुरुप भेदसे यह दो प्रकारका होता है । इसके पुल्लिंग जडको तोडनेसे उसके भीतर दो रेखाये एक दूसरेको काटती हुई गुजरती है जैसा कि सलीव (स्वस्तिक Cross)मे होता है। इसलिये इमे असलीब कहते है। औपधमे इसका उपयोग किया जाता है । फावानिया

उद्भिज औपधद्रव्य
इसका स्नी भेद है, जिसमे स्वस्तिक (मलोवी) रेसाये नही होती। इगको अदुर्राह भी कहते है । गिवर्टके अनुसार इसके लम्बे, गोल, छोटे कद होते है । जो एक दृढ ततु द्वारा पाताली घडमे लगे रहते है।

'फावानिया' लेटिन पेजोनियाका ही अरवी स्पान्तर है। इने अग्रेजीमें फीमेल पेभोनी (Female Pcony) कहते है । यही पेभोनिया भोफिमिनेलिस है जिसका विवरण इस लेखमे किया जा रहा है। पेओनियाकी एक इमोठी जाति (पभोनिया एमोडी Paconia emodi TVall) भारतवर्षमे भी हिमालय व कश्मीर और हमने कुमाऊँ तक प्रदेशो मे ५ ने १० हजार फुट तककी ऊंचाईपर होती है । इसकी जड सफेदी लिए लगभग उँगलोके बगवर मोटी और कुछ मिठास लिये कमैली होती है। यह विदेशी ऊदमलीवका उत्तम प्रतिनिधि द्रव्य है और उन प्रदेगोम उन्ही गुणोके लिये तथा उन्ही रोगोमे उसका उपयोग करते है, जिनमे कि ऊदमन्त्रीवका प्रयोग होता है। उनके अन्य नाम यह है-(५०) मामेग, (क०) मिद, महामेद, (अ०) हिमालयन पेयोनी (Ilimalayan Pcons) या पेओनी रोज (Pcony rosc)।

रामायनिक मगठन-उसो ताजे मूलमें पिष्टमय पदार्थ, गर्कग, वसा, मलेट्स (Alalatcs), आग्जेलेट्स (Oralates) फॉस्फेटम और विचित् कपायिन या टेनिन (Tannin) प्रभृति द्रव्य होते है ।

उपयुक्त अग-मूल । कल्प तथा योग-चूर्ण, हय ऊदगलीय । प्रकृति-तीसरे दर्जेमें गरम और स्क्ष।

गुणकर्म-यह मन, मोतीविशोधक (गफत्तेह उस्क), श्वययुविलयन, दोपोको पतला करनेवाला, लेखन, मूत्रजनन, आर्तवजनन, वेदनास्थापन और नाडियो (ज्ञान तन्तुओ) को बल देनेवाला है।

उपयोग-प्रमाथी, श्वययुविलयन और दोपतारययजनन होने के कारण बहुधा मस्तिष्क (गिर) रोगो और वातव्याधियोमे कदसलीवका उपयोग करते है। अस्तु, अपस्मार, कम्पवात, अदित, पक्षाघात, उन्माद, वातिक अन्यथाज्ञान (वमयास), मस्तिष्कमोथ, अपतत्रक (हिम्टीरिया) और बालापम्पारमें यह पुष्कल प्रयोगमें आता है। यकृदवरोध, कामला, आमागयल तया वम्नि एव वृक्कशूलमे भी इसका उपयोग करते है । आर्तवशोणित और प्रमवशोणितके उत्सर्ग (आविजनन)के लिये अन्यान्य उपयुक्त औपवद्रव्योके साथ इसे देते है। गर्भाशयके रोग, जलोदर, आक्षेपक, अश्मरी और पित्तावरोवमें भी यह प्रयुक्त होता है । बालकोको रक्तशोधनार्थ इसे देते है । अपस्मारी शिशुके गलेमें इसके लटकानेमे उपकार होता है। लेवन होने के कारण चेहरे के दाग और व्यग आदि दूर करने के लिा उसका पतला लेप (तिलाऽ) करते है।

अहितकर-गर्भवती स्त्रियोको। निवारण-गुलकद, मुलेठी और मधुशर्कर (माउलअस्ल)।

मात्रा-१ से ३ ग्राम (१ से ३ माशे) तक | अधिक मात्रामे देनेमे सिरदर्द, कानमे आवाज, दृष्टिभ्रम और वमन होता है।

(७४) कंकोल

फैमिली : पीपेरासे (Family Piperaceae) नाम-(हि०) ककोल, ककोल मिर्च, मिर्च ककोल, (म०) ककोलक (रा०नि०, सु० सू० अ० ४६), कबोल (ल), (ले०) कूवेत्रा जाति (Cubeba Sp.) |